केवल पठन हेतु

किताबें

किताबें कुछ कहना चाहती हैं।
किताबें करती हैं बातें
बीते ज़माने की
दुनिया की, इनसानों की
आज की, कल की
एक-एक पल की
खुशियों की, गमों की
फूलों की, काँटों की
जीत की, हार की
प्यार की, तकरार की!

क्या तुम नहीं सुनोगे
इन किताबों की बातें?

किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं।

किताबों में चिड़ियाँ चहचहाती हैं।
किताबों में खेतियाँ लहलहाती हैं।
किताबों में झरने गुनगुनाते हैं।
परियों के किस्से सुनाते हैं।
किताबों में रॉकिट का राज़ है।
किताबों में साइंस की आवाज़ है।
किताबों का कितना बड़ा संसार है
किताबों में ज्ञान की भरमार है।

क्या तुम इस संसार में
नहीं जाना चाहोगे?

किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं।

—सफ़दर हाशमी

12

मैडम क्यूरी

पाठ-प्रवेश

कठिनाइयाँ उन लोगों का मार्ग कभी नहीं रोकतीं जो लगन और तन्मयता से स्वयं को किसी उद्देश्य के प्रति समर्पित कर देते हैं। जीवन में सदा गतिशील बने रहना ही जीवन का उद्देश्य होना चाहिए। बिना लक्ष्य का जीवन बिन पतवार की नाव के समान होता है। विश्व में कई ऐसे महान व्यक्ति हुए हैं जिन्होंने समाज को लाभ पहुँचाने के लिए अपना जीवन पूर्ण रूप से समर्पित कर दिया। आइए, एक ऐसे ही व्यक्तित्व से प्रेरणा लें—

इतिहास ऐसे महान लोगों से भरा हुआ है जिन्होंने अपने बारे में सदैव कहा है—"मैं यह कर दिखाऊँगा।" ऐसी ही एक महान वैज्ञानिक थीं— मैडम क्यूरी। जिनका जन्म 7 नवंबर, 1867 को हुआ। उनके पिता का नाम स्क्लोदोवस्का था। वे पोलैंड में रहते थे। वे वैज्ञानिक थे तथा कॉलेज में विज्ञान के प्रोफ़ेसर थे। मैडम क्यूरी के बचपन का नाम मेरिया था।

मेरिया ने वारसा में शिक्षा प्राप्त की। वे पिता की तरह वैज्ञानिक बनना चाहती थीं। वारसा में पढ़ाई समाप्त कर आगे की पढ़ाई के लिए वे पेरिस चली गईं। पेरिस में उन्होंने अपने खर्च के पैसे जुटाने के लिए पढ़ने के साथ-साथ विश्वविद्यालय में पढ़ाना भी शुरू किया। वहीं उनकी मुलाकात प्रोफ़ेसर पियरे क्यूरी से हुई। पियरे क्यूरी वैज्ञानिक कार्य के प्रति पूर्णतया समर्पित वैज्ञानिक थे। पियरे क्यूरी से विवाह के पश्चात मेरिया मैडम क्यूरी के नाम से प्रसिद्ध हुईं।

पति-पत्नी दोनों की रुचि विज्ञान में थी इसलिए वे दोनों नए-नए प्रयोग करते रहते थे। वे ऐसे पदार्थ की खोज करना चाहते थे जो अँधेरे में भी अपनी किरणें बिखेरता हो।

"भूल जाओ"—मैडम क्यूरी को बड़े-बड़े वैज्ञानिकों ने सलाह दी। उनके अनुसार रेडियम जैसा तत्व हो ही नहीं सकता था लेकिन मैडम क्यूरी ने उनसे कहा, "मुझे खुद पर भरोसा है।"

दोनों का परिश्रम रंग लाया और उन्होंने दो विशेष पदार्थ खोज निकाले जिनमें से एक का नाम उन्होंने पोलोनियम रखा तथा दूसरे का रेडियम। इस खोज के कारण उन्हें संसार का सबसे बड़ा पुरस्कार 'नोबेल पुरस्कार' मिला। नोबेल मिलने के बाद न सिर्फ़ इनकी आर्थिक स्थिति में सुधार आया बल्कि काफ़ी

शब्दार्थ

वैज्ञानिक—विज्ञान से संबंध रखने वाला; **प्रोफ़ेसर**—जो कॉलेज में पढ़ाते हैं; **प्रयोग**—जाँच, परीक्षण

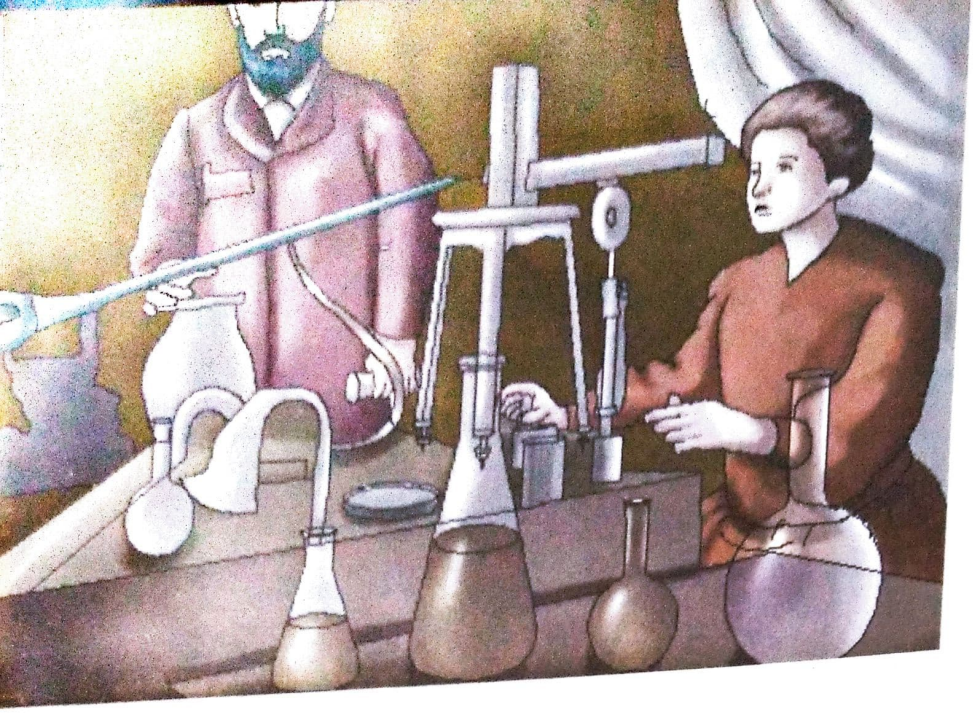

लोकप्रियता भी मिली। मैडम क्यूरी तथा उनके पति पियरे क्यूरी ने अपनी खोज के दौरान कई कठिनाइयों का सामना किया पर सफलता पाने के बाद काफ़ी धन और सम्मान प्राप्त हुआ।

प्रसिद्धि के कुछ अँधेरे पहलू भी होते हैं। रेडियो सक्रिय पदार्थों से मुक्त हुई किरणें बहुत तीक्ष्ण होती हैं। इनसे जीवित कोशिकाओं के नष्ट होने का खतरा रहता है। कई बार शरीर पर घाव बन जाते हैं। अधिक समय रेडियो सक्रिय पदार्थों के बीच रहने से मेरिया को रक्त अल्पता और थकान का अनुभव होने लगा और पियरे को भयावह दर्द के दौरे पड़ने लगे। इन विकिरण जनित बीमारियों के चरम तक पहुँचने के पहले ही एक दुर्घटना में पियरे का निधन हो गया। पति की मौत के दुख को भुलाने के लिए वे अपना सारा समय विज्ञान की खोजों में बिताने लगीं। पेरिस के विश्वविद्यालय में उन्हें अपने पति के स्थान पर प्रोफ़ेसर की नौकरी मिल गई। रसायन-विज्ञान की अन्य खोजों पर उन्हें फिर से नोबेल पुरस्कार मिला। इस प्रतिभाशाली महिला ने दो बार नोबेल पुरस्कार प्राप्त किया।

'यदि अपने काम के प्रति लगन हो, तो मनुष्य के लिए कुछ भी असंभव नहीं होता।' मैडम क्यूरी के जीवन से हमें मूल्यवान शिक्षा प्राप्त होती है। मैडम क्यूरी ने अपने जीवन के कठिन समय के बारे में लिखा है, ''कष्टप्रद पुराने गोदाम में हमने अपने जीवन के सर्वोत्तम वर्ष कार्य को समर्पित करते हुए बिताए। कभी-कभी मुझे अपनी लंबाई जितनी बड़ी लोहे की छड़ से उबलते हुए पदार्थ को मिलाने में पूरा-पूरा दिन व्यतीत करना पड़ता था। मैं शाम तक थकान से टूट जाती थी। इसके विपरीत काम तब बहुत सूक्ष्म और गंभीर हो जाता जब रेडियम के क्रिस्टलीकरण पर ध्यान केंद्रित करना पड़ता था। मैं तब बहुत क्षुब्ध हो जाती थी, जब इतनी मेहनत से प्राप्त किए उत्पाद को दूषित धुएँ और धूल से बचा नहीं पाती थी। इसके बावजूद मैं शोध के उस अबाधित और शांत माहौल में मिले हर्ष को कभी अभिव्यक्त नहीं कर पाऊँगी।''

परिश्रम एक ऐसी साधना है, जिसके द्वारा मनुष्य महान से महान कार्य कर सकता है। 4 जुलाई, 1934 को अतिशय रेडिएशन के प्रभाव के कारण उनका देहांत हो गया।

शब्दार्थ

तीक्ष्ण—तेज़; **कष्टप्रद**—दुख या पीड़ा देने वाला; **क्षुब्ध**—व्याकुल, विचलित, बेचैन; **अबाधित**—बिना किसी बाधा के